खण्ड–8, अंक–1, वर्ष–2020 वैज्ञानिक आलेख
D.O.I.: 10.22445/avsp.v8i1.25

नदियों के किनारे स्थित तीर्थों का पर्यावरणीय विकास

महेन्द्र प्रताप सिंह

कार्यालय–प्रधान मुख्य वन संरक्षक, 17, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ–226 001, उ.प्र., भारत

प्राप्ति तिथि–28.07.2020, स्वीकृति तिथि–27.11.2020

सार– हमारे देश की नदियाँ पहले शुद्ध जल से परिपूर्ण थीं जिसका पान कर एवं उसमें स्नान कर लोग आनन्द की अनुभूति करते थे। इन्हीं पावन नदियों के तट पर हमारे प्रमुख तीर्थ स्थल स्थित हैं। नदियों के तट पर स्थित इन तीर्थस्थलों का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से विकास एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके अन्तर्गत जल स्रोतों का संरक्षण, धार्मिक एवं पर्यावरणीय महत्व की प्रजातियों का रोपण एवं पॉलीथीन मुक्ति आदि कार्य किये जा सकते हैं। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इन कार्यों में सातत्यता (Continuty) अत्यन्त आवश्यक है तभी ऐसे प्रयास सफल हो सकते हैं। शासकीय प्रयासों के साथ–साथ धार्मिक वृत्ति एवं समर्पण भाव से प्रत्येक जागरूक व्यक्ति को इस दिशा में यथा सम्भव प्रयास करना चाहिये। इस दृष्टि से वृन्दावन एवं लखनऊ के आस–पास स्थित तीर्थों पर जनसहयोग से कराये गये कार्यों का उल्लेख इस लेख में किया गया है। इसका उद्देश्य है कि इसका अनुसरण कर अन्य स्थानों पर भी इस दिशा में प्रयास किया जाये।

बीज शब्द– नदियाँ, शुद्ध जल, तीर्थ स्थल, पर्यावरण, पर्यावरणीय विकास

Environmental Development of Pilgrimage at the Bank of rivers

Mahendra Pratap Singh

Conservator of Forests/ Staff Officer, Office-Principal Chief Conservator of Forests and Head,
17, Rana Pratap Marg, Lucknow-226 001, UP, India

Abstract- In ancient days the rivers of our country were full of pure water. People used to drink and bathe in it and used to feel the joy. Our main pilgrimage sites are situated on the banks of these holy rivers. Development of these shrines located on the banks of rivers is an important task in terms of environmental protection. It is necessary to clarify that continuity is very important in these works only then such efforts can be successful. Besides Government effort, every conscious person should make every effort in this direction with religious intentions and dedication as well as government support. With this concept, the work done with public cooperation on pilgrimages located in Vrindavan and around Lucknow has been mentioned in this article. Its purpose is that following this, efforts should be made in this direction at other places also.

Key words- Rivers, Pure water, Place of pilgrimage, Environment, Environmental development

1. परिचय

हमारे देश की नदियाँ पहले शुद्ध जल से परिपूर्ण थीं जिसका पान कर एवं उसमें स्नान कर लोग आनन्द की अनुभूति करते थे। इन्हीं पावन नदियों के तट पर हमारे प्रमुख तीर्थ स्थल स्थित हैं। प्राचीन काल में हमारे ऋषि मुनि नदियों के किनारे स्थित इन तीर्थ स्थलों पर प्रकृति की गोद में रहते थे। सृष्टि के सभी जीव–जन्तुओं एवं पेड–पौधों से उनका पारस्परिक सम्बन्ध होता था। वे अपने बच्चों के समान प्रकृति के प्रत्येक अवयव की देखभाल एवं सुरक्षा करते थे। नदी तट पर स्थित आश्रम शिक्षा का केन्द्र थे, जिससे देश के भावी कर्णधार प्रकृति के प्रति स्वाभाविक प्रेम का पाठ पढ़ कर एवं उसे आत्मसात् कर जीवन की कर्मभूमि में प्रवेश करते थे। नदियों की पावन धारा के

Corresponding Author: mahendrapratapsingh1960@gmail.com

निर्मल प्रवाह के साथ ही नदी तट पर स्थित इन आश्रमों से ज्ञान विज्ञान की पावन यशस्वी धारा भी सतत् प्रवाहित होती थी जिससे यह भारत देश जगद्गुरु के रूप में समस्त विश्व के लिये प्रेरणा का स्रोत था।

नदी तट पर स्थित वे तीर्थ आज भी विद्यमान हैं किन्तु नदियों का जल पीना तो दूर, नहाने लायक भी नहीं है। तीर्थ स्थलों की हरीतिमा लुप्त हो गई है। तीर्थ स्थलों की गन्दगी से मन कराह उठता है। इन स्थलों पर पक्के निर्माण तो लगातार हो रहे हैं किन्तु उनके पर्यावरणीय विकास पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वस्तुतः तीर्थस्थलों का विकास पाँच सितारा संस्कृति से भिन्न है। तीर्थ स्थलों के पर्यावरणीय विकास करके ही उन्हें आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत बनाया जा सकता है। दुर्भाग्य वश इस दिशा में प्रभावी प्रयास नहीं हो सके हैं। निश्चित रूप से यह बहुत बड़ा कार्य है जिसके लिये निरंतर प्रभावी प्रयास की आवश्यकता है। इस दिशा में विचार करने पर मुख्यतः तीन कार्य किये जाने की आवश्यकता दृष्टिगोचर होती है– पहला नदियों एवं पवित्र कुण्डों की सफाई, दूसरा तीर्थस्थलों को हरा भरा करना एवं तीसरा तीर्थस्थलों को पॉलीथीन मुक्त करना। मेरा यह अनुभव है कि पॉलीथीन मुक्त करके हम किसी भी क्षेत्र को स्थाई रूप से गन्दा होने से बचाते हैं। इस दिशा में किये गये कतिपय कार्यों का उल्लेख यहाँ पर किया जा रहा है।[1–3]

2. माँ चन्द्रिका देवी मन्दिर

लखनऊ से लगभग 30 कि.मी. दूर बक्शी के तालाब के आगे माँ चन्द्रिका देवी शक्तिपीठ परिसर स्थित है। नवरात्रि, अमावस्या एवं अन्य अवसरों पर वहाँ अपार भीड़ होती है। यह महाभारत कालीन एवं श्री कृष्ण से जुड़ा तीर्थस्थल है। इस मन्दिर का परिसर अत्यन्त विशाल है। इसी परिसर में सुधन्वा कुण्ड स्थित है। यहाँ पॉलीथीन की अधिकता के कारण यह कुण्ड धीरे–धीरे प्रदूषित हो रहा है तथा उसकी मछलियाँ भी मर रही हैं। यहाँ की दुकानों पर प्रयोग की जाने वाली पॉलीथीन थैलियों, चाय आदि के लिये प्रयुक्त होने वाले प्लास्टिक के गिलास एवं श्रद्धालुओं द्वारा पॉलीथीन थैलियों सहित नियमित रूप से कुण्ड में किये जाने वाले विसर्जन से न केवल सुधन्वा कुण्ड बल्कि पूरे परिसर का वातावरण विषाक्त हो रहा है। मेरे मन में विचार आया कि क्यों न इस परिसर को पॉलीथीन प्रदूषण मुक्त कराने का प्रयास किया जाय। मेरे विभागीय मित्र श्री ए. पी. सिन्हा एवं श्री वी. के. मिश्र के सहयोग से दिनांक 11.09.2011 को मन्दिर समिति के अध्यक्ष श्री अखिलेश सिंह चौहान, महामन्त्री श्री अनुराग तिवारी 'अन्नू', डॉ. एस.के. सिंह, श्री बी.डी. सिंह, सभी दुकानदारों एवं स्थानीय व्यक्तियों के साथ बैठक की गई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि दिनांक 28.09.2011 से इस परिसर को पॉलीथीन मुक्त किया जायगा। उसके बाद आस पास के कुम्हारों के साथ बैठक कर कुल्हड़ आपूर्ति की व्यवस्था की गई। पॉलीथीन थैली के विकल्प रूप में दुकानदारों को कागज एवं वैकल्पिक थैले उपलब्ध कराये गये। इस प्रकार प्रथम चरण में दुकानों पर प्लास्टिक कप के स्थान पर कुल्हड़ लाये गये तथा पॉलीथीन थैलियों के स्थान पर कागज एवं अन्य थैलों का प्रयोग प्रारम्भ किया गया। फिर यह विचार किया गया कि स्थाई रूप में इस परिसर को पॉलीथीन मुक्त बनाने के लिये स्थानीय ग्रामवासियों, मन्दिर समिति के लोगों एवं दुकानदारों को किसी श्रेष्ठ सन्त से सौगन्ध दिलाई जाय। इसी के क्रम में दिनांक 28.09.2011 को नवरात्रि के प्रथम दिवस पर मन्दिर परिसर में मेरे आध्यात्मिक गुरु सन्त स्वामी महेशानन्द जी द्वारा सभी को परिसर को पॉलीथीन मुक्त करने की शपथ दिलाई गई। शपथ ग्रहण समारोह में मन्दिर समिति के संरक्षक श्री भगवती सिंह जी, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. हरि शंकर मिश्र एवं अनेक शिक्षाविद्, मन्दिर समिति के सभी पदाधिकारी, वन विभाग के अनेक सहयोगी, परिसर के सभी दुकानदार एवं अनेक स्थानीय लोगों द्वारा परिसर में पॉलीथीन का प्रयोग न करने का संकल्प लिया गया। इस समय तक परिसर में सन्तोशजनक सीमा तक दुकानों को पॉलीथीन मुक्त किया जा चुका है। श्रद्धालुओं एवं भक्तों द्वारा पॉलीथीन का प्रयोग रुकवाने एवं मेला के दिनों में बाहर से आने वालों से पॉलीथीन रुकवाने की दिशा में मन्दिर समिति के सहयोग से प्रयास जारी है।

दिनांक 28.09.2011 को ही स्वामी जी द्वारा कृष्णवट का रोपण कर परिसर में वृक्षारोपण का शुभारम्भ कर दिया गया जो अब वृक्ष का रूप ले रहे हैं। इसके बाद मेरे मन में यह विचार आया कि इतने विशाल परिसर में सुनियोजित ढ़ंग से न केवल पौधारोपण कराया जाय बल्कि उसे स्थापित कर इसे हरा भरा किया जाय। वृक्षारोपण के बारे में मेरा यह अनुभव रहा है कि अनेक माध्यमों से प्रतिवर्ष व्यापक रूप से वृक्षारोपण किया जाता है, किन्तु अधिकांशतः उनकी सुरक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। पौधों की सुरक्षा बच्चे को पालने जैसी है। पौधा रोपण के बाद लम्बे समय तक, जब तक कि वह पूर्णतः स्थापित न हो जाय, उसकी सुरक्षा आवश्यक है। वर्ष 2012 एवं 2013 में मन्दिर समिति एवं वन विभाग के सहयोग से व्यापक पौधारोपण किया गया। गोमती तट पर जल भराव वाले क्षेत्र में अर्जुन का रोपण किया गया एवं मन्दिर के आस–पास पीपल, पाकड़, बरगद एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रजातियों को रोपित किया गया। इसमें धार्मिक महत्व को देखते हुये वहाँ कल्पवृक्ष का भी रोपण किया गया है। सन्तोष का विषय है कि सभी प्रजातियाँ न केवल जीवित हैं बल्कि अच्छी दशा में चल रही हैं। इस परिसर में सिन्दूर के अनेक पौधों का रोपण किया गया है जिनमें अब फूल और फल आने लगे हैं। सिन्दूर का प्रयोग माता के श्रृंगार हेतु किया जाता है। वर्ष 2020 में कोरोना काल में यहाँ पर पुष्प वाटिका विकसित की गयी है जिसमें चांदनी, चम्पा, गुड़हल, कनेर, हरसिंगार आदि के पौधे लगाये गये हैं। इनके फूलों का प्रयोग माता के श्रृंगार हेतु किया जाना है।

अब यह देखकर बड़ी प्रसन्नता एवं सन्तोष का अनुभव होता है कि वहाँ पर चाय आदि की दुकानों पर मिट्टी के कुल्हड़, चाट की दुकानों पर पत्तल एवं अन्य दुकानों पर कागज के थैलों का व्यापक प्रयोग किया जा रहा है। इससे वहाँ होने वाली गन्दगी में कमी आयी है। इसके साथ ही कुम्हारों एवं पत्तल बनाने वाले स्थानीय लोगों को रोजगार मिला है। इस उल्लेखनीय पहल के लिये मन्दिर समिति के सभी पदाधिकारी, परिसर के दुकानदार एवं सहयोगी मित्रगण बधाई के पात्र हैं। मन्दिर परिसर में कराए गये कार्यों का स्मरण करने पर बरबस उन दो सहयोगियों की याद आती है जो अब इस दुनिया में नहीं रहे। श्री बबलू सिंह पॉलीथीन मुक्ति एवं पौधारोपण कार्यक्रम में सदैव हर प्रकार का सहयोग देते रहे। मो. इदरीश वृक्षारोपण कार्यक्रम में ऐसे लगे रहते थे जैसे उनके घर का कोई कार्य हो। इन मित्रों को याद करके आज भी आँखें नम हो जाती हैं।

इसके अगले चरण में भक्तों द्वारा बाहर से लाई जाने वाली पॉलीथीन पर नियन्त्रण किये जाने की दिशा में अभी व्यापक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है।

पॉलीथीन का प्रयोग बन्द एवं जनसहयोग से पौधारोपण करने की यह स्फूर्ती छोटी सी पहल सुखद, प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है।

(चन्द्रिका देवी मन्दिर परिसर में चाय की दुकान पर कुल्हड़ का प्रयोग)

3. नैमिषारण्य

उत्तर प्रदेश के सीतापुर जनपद में स्थित नैमिषारण्य एक प्रसिद्ध एवं प्राचीन तीर्थस्थल है। यह प्राचीन ऋषियों की तपस्थली रही है। प्राचीन काल में यहाँ सघन वन था, इसीलिये इस क्षेत्र का नाम नैमिषारण्य था। परन्तु वर्तमान में यहाँ वन नहीं बचे हैं। आज नैमिषारण्य में नैमिष मात्र बचा है, अरण्य गायब है। यह विचारणीय विषय है, जिस पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। मेरे आध्यात्मिक गुरु श्री अखण्डानन्द आश्रम, वृन्दावन के स्वामी महेशानन्द जी हैं। कभी–कभी लखनऊ स्थित मेरे निवास पर उनका आना होता है। उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री जी उनके गुरुभाई थे। जब भी स्वामी जी लखनऊ आते थे, शास्त्री जी से मिलने अवश्य जाते थे। शास्त्री जी एक बार लखनऊ प्राणि उद्यान में एक समारोह में आए थे, तब उन्होंने वन विभाग के अधिकारियों से कहा था कि वृन्दावन एवं नैमिषारण्य हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। आज न तो वृन्दावन में वन है और नही नैमिषारण्य में अरण्य। राज्यपाल ने आग्रह किया कि वृन्दावन में वन एवं नैमिषारण्य में अरण्य स्थापित करने का विशेष प्रयास किया जाय। स्वामी जी के साथ मैं तीन बार शास्त्री जी से मिला। मेरे वन विभाग में कार्यरत होने के कारण उन्होंने मुझसे तीनों बार जोर देकर कहा कि कि वृन्दावन में वन एवं नैमिषारण्य में अरण्य स्थापित करने की दिशा में कुछ किया जाय। मैंने कुछ विभागीय अधिकारियों से इसकी चर्चा भी की किन्तु कोई ठोस परिणाम नहीं निकला। बहुत दिन बाद मैंने समाचार पत्र में पढ़ा कि शास्त्री जी नहीं रहे। उस दिन के बाद मैं कई दिन तक व्यथित रहा। उनके हृदय की पीड़ा को मैने अपने मन में आत्मसात् किया एवं तय किया कि शास्त्री जी की इच्छा पूर्ण करने की दिशा में यथासम्भव प्रयास करूँगा।

इसी बीच वन विभाग के अधिकारी श्री राधे कृष्ण दूबे द्वारा एक महीने तक नैमिषारण्य परिक्रमा पथ की पदयात्रा कर परिक्रमा पथ पर स्थानीय लोगों एवं वन विभाग के सहयोग से 88000 ऋषियों की स्मृति में 88000 पौधों का रोपण कराया गया। यह एक अद्भुत पदयात्रा थी जिसमें व्यापक जनसमर्थन मिला। इस पद यात्रा में मुझे भी दो दिन सम्मिलित होने का अवसर मिला तथा कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प मन में आकार लेने लगा। इसके अतिरिक्त चन्द्रिका देवी मन्दिर परिसर में पॉलीथीन मुक्ति एवं सफल वृक्षारोपण से मन में विश्वास उत्पन्न हुआ तथा नैमिषारण्य में इस दिशा में कुछ किए जाने का भाव जगा।

नैमिषारण्य स्थित पहला आश्रम में दिनांक 16 दिसम्बर 2012 को पहली सभा की गई। इस सभा में विभिन्न आश्रमों के प्रमुख सन्त, व्यापार मण्डल के प्रतिनिधिगण, वन विभाग के अधिकारी कर्मचारी गण, मीडिया से जुड़े प्रतिनिधि एवं स्थानीय गणमान्य लोग उपस्थित थे। इस सभा में निर्णय लिया गया कि नैमिषारण्य स्थित श्मशान घाट एवं उसके आस–पास की भूमि पर वृक्षारोपण कार्य कराया जाय।

पॉलीथीन मुक्त क्षेत्र बनाने पर लोगों की राय थी कि यह अत्यन्त कठिन कार्य है। श्री ए.के. सिंह अध्यक्ष व्यापार मण्डल के सुझाव पर यह तय हुआ 29 दिसम्बर सन् 2012 को नैमिषारण्य के प्रमुख साधु सन्त, व्यापार मण्डल के प्रतिनिधिगण एवं गणमान्य लोग माँ चन्द्रिकादेवी मन्दिर परिसर में आकर देखें कि वहाँ पर पॉलीथीन के विकल्प का कैसे प्रयोग किया जा रहा है तथा वहाँ गोमती नदी के किनारे किये जा रहे रोपण कार्य को भी देखें ताकि एक सकारात्मक एवं व्यावहारिक सोच जागृत हो सके।

दिनांक 29 दिसम्बर सन् 2012 को चन्द्रिका देवीमन्दिर परिसर में सभा की गई। इस सभा में चन्द्रिका देवी मन्दिर परिसर के अध्यक्ष श्री अखिलेश सिंह चौहान ने सभी को वहाँ पर पॉलीथीन के विकल्पों को दिखाया। चाय एवं चाट की दुकानों पर कुल्हड़ एवं पत्तल का प्रयोग देखकर लोग बहुत प्रभावित हुये। इस सभा से एक सकारात्मक वातावरण बना तथा नैमिषारण्य के गणमान्य लोगों के मन में यह भाव आया कि पॉलीथीन के विकल्प का प्रयोग कर इसे हटाया जा सकता है। यह निश्चित हुआ कि दिनांक 27 जनवरी 2013 को चन्द्रिका देवी मन्दिर परिसर के पॉलीथीन के विकल्प को नैमिषारण्य लाया जाय तथा पॉलीथीन को बन्द करने की दिशा में आगे प्रयास किया जाय।

दिनांक 27 जनवरी 2013 को पॉलीथीन के विकल्प के साथ मैं नैमिषारण्य पहुँचा। इस सभा में पहला आश्रम के महन्त जी एवं अन्य कई लोगों ने पॉलीथीन के विकल्प के रूप में प्रयोग की जाने वाली थैलियाँ खरीदीं। इस सभा में उत्तर प्रदेश में पॉलीथीन को प्रतिबन्धित करने के मा. उच्च न्यायालय के आदेश से सबको अवगत कराया गया। ललिता पीठ के प्रधान पुजारी श्री गौरी शंकर जी द्वारा सुझाव दिया गया कि यदि मा. उच्च न्यायालय के आदेश के अनुपालन में आग्रह करके प्रशासक से ललितापीठ को पॉलीथीन मुक्त करने का आदेश करा लिया जाय तो पॉलीथीन मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। मेरे मित्र श्री विनय कृष्ण मिश्र जी के प्रयास से दिनांक 8 मार्च 2013 को माँ ललितादेवी परिसर को पॉलीथीन मुक्त करने का आदेश रिसीवर महोदय से निर्गत हो गया। इस प्रकार पॉलीथीन मुक्ति की दिशा में एक सार्थक प्रयास हुआ। इस सबके बावजूद नैमिषारण्य में पॉलीथीन मुक्ति का कार्य सफल नहीं हो पाया है। इस दिशा में और अधिक प्रयास किया जाना शेष है।

इसके अतिरिक्त गोमती के तट पर श्मशानघाट के निकट वन विभाग द्वारा स्थानीय गणमान्य नागरिकों के सहयोग से भूमि का प्रस्ताव प्राप्त कर वृक्षारोपण कार्य भी प्रारम्भ कर दिया गया। यह वह भूमि है जिस पर लगातार अतिक्रमण होता जा रहा था। नदी तट स्थित इस संवेदनशील भूमि पर 05 हेक्टेयर क्षेत्र में वन विभाग एवं स्थानीय लोगों के सहयोग से विधिवत् पौधारोपण कार्य कराया गया। इसके अतिरिक्त बालाजी मन्दिर परिसर में पंचवटी, नवग्रह वाटिका एवं नक्षत्र वाटिका की स्थापना कराई गई। ईश्वर की कृपा से यहाँ पर रोपित सभी पौधे सुरक्षित एवं प्रफुल्लित हैं। उक्त के अतिरिक्त गोमतीपार क्षेत्र स्थित पहला आश्रम की भूमि पर भी व्यापक रोपण कराया गया। नैमिषारण्य से थोड़ी दूर स्थित रुद्रावर्त मन्दिर के पास हरिशंकरी स्थापित की गई। भगवान शिव के अद्भुत भक्त यहाँ के महात्मा जी द्वारा हरिशंकरी की स्वयं सेवा की जा रही है जिसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं।

नैमिषारण्य में स्थापित नक्षत्र वाटिका

नैमिषारण्य में गोमती तट पर किया गया वृक्षारोपण

4. धौम्य ऋषि आश्रम, धोबियाघाट, हरदोई

हरदोई जनपद में गोमती के तट पर स्थित धोबियाघाट एक अद्भुत स्थान है। यह दो कारणों से अद्भुत है– पहला यहाँ भूमि से अनेक पानी के स्रोते निकलते हैं जो बाद में गोमती नदी में मिलते हैं तथा दूसरा गोमती के तट पर स्थित मन्दिर के सघन वन क्षेत्र को देखकर प्राचीन आश्रमों की परिकल्पना साकार रूप लेती है। आज के व्यावसायिक युग में यहाँ के सघन वनक्षेत्र को बचाये रखने के लिये यहाँ के महन्त श्री नारायणानन्द जी अभिनन्दन के योग्य हैं। लोकभारती के नेतृत्व में यहाँ पर एक सभा का आयोजन कर यहाँ पर पॉलीथीन बन्द करने पर विचार किया गया। यहाँ की सभा में हमें स्वामी जी एवं अन्य सभी का व्यापक सहयोग मिला एवं पॉलीथीन बन्द करने का अभियान यहाँ भी प्रारम्भ हो गया।

5. सैलानी माता मन्दिर

लखनऊ से लगभग 20 कि.मी. दूर बाराबंकी जिले में गोमती नदी के तट पर सैलानी माता का मन्दिर स्थित है। लोक भारती के सहयोग से मन्दिर समिति के पदाधिकारियों के साथ यहाँ पौधारोपण के सम्बन्ध में बैठक की गई।

वर्ष 2014 वर्षाकाल में यहाँ पर धार्मिक महत्व के एवं लुप्त हो रही वृक्ष प्रजातियों के व्यापक पौधारोपण की योजना बनायी गयी। उक्त पौधा रोपण हेतु मन्दिर समिति द्वारा यहाँ पर रोपण हेतु वृत्ताकार खाईं खुदवाई गयी। दिनांक 04.05.2014 को मन्दिर समिति के अध्यक्ष श्री रामदुलारे यादव एवं मन्दिर के मुख्य पुजारी श्री वासुदेव जी द्वारा रुद्राक्ष के पौधे का रोपण कर पौध रोपण का शुभारम्भ किया गया। दिनांक 20.07.2014 को सैलानी माता मन्दिर परिसर में कल्पवृक्ष, हरिशंकरी (पीपल, पाकड़ एवं बरगद), कैथा आदि प्रजातियों का रोपण किया गया। इस परिसर में रोपित किये गये अधिकांश पौधे जीवित है एवं इस समय वृक्ष का रूप ले रहे हैं।

(सैलानी माता मन्दिर परिसर में मन्दिर समिति के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्रीराम दुलारे यादव द्वारा रुद्राक्ष का रोपण)

6. भौरेश्वर महादेव मन्दिर

इस परिसर में पीपल, पाकड़, बरगद एवं अन्य पौधों का रोपण आई.एफ.डी.सी. के सहयोग से किया गया है। बन्दरों की अधिकता के बावजूद पौधारोपण सफल है। बन्दरों द्वारा अनेक बार पौधों को तोड़ दिया गया है। क्षेत्र में ब्रिकगार्ड पर कांटेदार झाडियाँ लगाकर पौधों को बचाने का प्रयास किया गया है। अतिविपरीत परिस्थितियों में पौध रोपण को सफल बनाने की दृष्टि से यह एक अनुकरणय उदाहरण है।

(भौरेश्वर महादेव मन्दिर परिसर में पौधा रोपण)

7. वृन्दावन

वृन्दावन क्षेत्र में स्वामी अखण्डानन्द जी आश्रम के नये परिसर में वर्ष 2019 में कृष्णवट, पारिजात एवं अन्य महत्वपूर्ण प्रजातियों का रोपण किया गया। वृन्दावन में भविष्य में अन्य स्थानों पर भगवान कृष्ण से जुड़े पौधों का रोपण प्रस्तावित है।

8. निष्कर्ष

नदियों के तट पर स्थित तीर्थस्थलों का पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से विकास कार्य है कराये गये हैं। इसके अन्तर्गत जल स्रोतों का संरक्षण, धार्मिक एवं पर्यावरणीय महत्व की प्रजातियों का रोपण एवं पॉलीथीन मुक्ति आदि कार्यों को पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से कराया गया। इन सभी कार्यों को निरंतर करते रहने पर ही परिलक्षित प्रयास सफल हो सकते हैं। आने वाले समय में शासकीय प्रयासों के साथ–साथ धार्मिक वृत्ति एवं समर्पण भाव से प्रत्येक जागरुक व्यक्ति को इस दिशा में यथा सम्भव प्रयास करना होगा। इस लेख का उद्देश्य है कि इसका अनुसरण कर अन्य स्थानों पर भी इस दिशा में प्रयास किया जाये।

संदर्भ

1. सिंह, राजेन्द्र (2015) हमारी सभ्यता, संस्कृति और नदियाँ, कादम्बिनी, मई 2015। https://hindi.indiawaterportal.org/content/hamaarai-sabhayataa-sansakartai-aura-nadaiyaan/content-type-page/49471
2. wikipedia.org/wiki/ नदि
3. शर्मा, आर0 पी0 (1997) नदियों का संरक्षण, योजना, अगस्त 1997। https://hindi.indiawaterportal.org/content/nadaiyaon-kaa-sanrakasana/content-type-page/49950